



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

192] नई दिल्ली, बुधवार, अगस्त 8, 1974/श्रावण 17, 1896
No. 192] NEW DELHI, THURSDAY, AUGUST 8, 1974/SRAVANA 17, 1896

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF COMMERCE

PUBLIC NOTICE

IMPORT TRADE CONTROL

New Delhi, the 8th August 1974

SUBJECT.—Import of Woollen Rags—Definition of Woollen Rags.

No. 115-ITC(PN)/74.—Attention is invited to the Ministry of Commerce Public Notice No. 154-ITC(PN)/73 dated the 17th September, 1973 on the above subject.

2. Definition of woollen rags as contained in Para 2 of the Public Notice mentioned above has been amended to read as follows :—

- | | | | |
|---------------|---------|----|---|
| "Woollen Rags | (a) NEW | .. | Waste woollen cloth whether woven or knitted which is left after a garment had been cut out including genuine tailor cuttings, piece ends, discarded pattern bunches and sample bits. |
| | (b) OLD | .. | Rags of woollen textile fabrics (including knitted and crocheted fabrics), which are required for manufacture of shoddy yarn and may consist of articles of furnishing or clothing or other clothing so worn out, soiled or torn as to be beyond cleaning or repair. In case serviceable garments have been imported they will have to be mutilated before release by Customs authorities." |

3. The above definition will also apply to consignments that had arrived prior to the date of issue of this Public Notice but are yet to be cleared.

B. D. KUMAR,

Chief Controller of Imports and Exports.

बाणिज्य मंत्रालय

सार्वजनिक सूचना

आयात व्यापार नियंत्रण

नई दिल्ली, 8 अगस्त, 1974

विषय.—ऊनी चिथड़ों का आयात—ऊनी चिथड़ों की परिभाषा ।

सं० 115-आई०टी०सी० (पी०एन०)/74.—उपर्युक्त विषय पर, बाणिज्य मंत्रालय की सार्वजनिक सूचना संख्या 154 आई टी सी (पी एन)/73 दिनांक 17 सितम्बर, 1973 की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है ।

2. ऊपर उल्लिखित सार्वजनिक सूचना की कंडिका 2 में यथा निहित ऊनी चिथड़ों की परिभाषा को निम्न प्रकार से पढ़ने के लिए संशोधित किया गया है :—

“ऊनी चिथड़े (क) नये —रद्दी ऊनी कपड़े चाहे वे बुने हुए हों या सलाई से बुने हुए हों, जो कपड़े काटने के बाद बच जाते हैं जिसमें दर्जी के द्वारा काटे हुए यथार्थ टुकड़े, अन्तिम टुकड़े, निकाले हुए नमूना समूह और नमूने के टुकड़े शामिल हैं ।

(ख) पुराने— ऊनी वस्त्र के चिथड़े (जिसमें सलाई से बुने हुए और कांटे से बुने हुए वस्त्र शामिल हैं), जिनकी जरूरतें रद्दी धागे के विनिर्माण में हैं जो सजावट करने या आवरण करने या ऐसे ही फटे-पुराने आवरण, ठोस या फटे जो सफाई करने या मरम्मत करने से परे हैं, वे हो सकते हैं । उस मामले में जिसमें उपयोगी कपड़े आयात किए गए हैं, उन्हें सीमा-शुल्क प्राधिकारियों से निकासी के पूर्व ही फटे-फटे बनाने पड़ेंगे ।

3. उपर्युक्त परिभाषा उन परेक्षणों के लिए भी लागू होगी जो उस सार्वजनिक सूचना के जारी होने से पूर्व ही पहुंच गए थे किन्तु उनकी निकासी अभी नहीं हुई है ।

बी० डी० कुमार,

मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात